डॉ० [illegible] – चन्द्रवंशी
एस० एस० कॉलेज जहानाबाद

प्रश्न – 'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी की समीक्षा कीजिए। अथवा
'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी का कहानीकला की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर :- 'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी एक राजा राधिका रमण सिंह की अमर कथात्मक कृति है। जब हिन्दी साहित्य में आधुनिक कहानी अपना आकार ले रही थी उस समय प्रेमचन्द, राजा राधिकारमण सिंह, जयशंकर प्रसाद प्रभृति साहित्यकारों ने उसे गति प्रदान की। राजा साहब प्रेमचन्द के समकालीन थे तथा अपनी साहित्यिक अवदानों से हिन्दी कथा साहित्य का कोष भर रहे थे। इन्होंने हिन्दी कथा साहित्य के विकास में ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह किया। चुम्बन और चांटा, राम-रहीम, संस्कार तथा पुरुष और नारी – जैसे नरकाम उपन्यासों की रचना के साथ ही 'सावनी समां', 'टूटा तारा', 'सूरदास' एवं 'अबला क्या ऐसी सबला' जैसे संस्मरणों से भी इन्होंने हिन्दी कथा साहित्य का कोष समृद्ध किया। परिमाण एवं गुणवत्ता – दोनों ही दृष्टियों से इनका साहित्य श्रेष्ठ है।

कथासूत्र → कथानायक नरेन्द्र अपने दादाजी के बालसखा संत जिन्हें लोग योगीश्वर के रूप में जानते थे के पास धर्मशास्त्रों के अध्ययन के लिए जाता है। नर्मदा के एकान्त में स्थित उनकी कुटी अत्यन्त रमणीय एवं मनोहारी परिवेश में अवस्थित थी। वहीं योगीश्वर की पालिता पुत्री किरण की चंचलता और भोलेपन पर नरेन्द्र रीझ जाता है और ~~उसके~~ उसका सान्निध्य प्राप्त करने के लिए अवसर ढूंढता रहता है। उस एकान्त में केवल पिता-पुत्री का ही निवास है। एक बार नरेन्द्र उसके कानों में हाथ में पहने जाने वाला कंगन देख कर पूछ बैठता है कि यह क्या है? किरण तुरंत अत्यन्त सरलता से उत्तर देती है- कानों में कंगना नरेन्द्र के

मन में किरण की यह छवि ऐसे अंकित हो जाती है कि भुलाए नहीं भूलती। वह अपने मन-प्राण से किरण के रूप और उसकी स्वाभाविकता तथा भोलेपन पर न्यौछावर हो जाता है। अध्ययन की समाप्ति के अवसर पर योगीश्वर उसके हाथों में किरण का हाथ सौंप कर निश्चिन्त मन से हिमालय की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। किरण की प्राप्ति से नरेन्द्र की प्रसन्नता की सीमा नहीं रहती। वह उसे अपने राजप्रासाद में बड़े ही मान के साथ रखता है। उसे नित्य नवीन आभूषणों से सुसज्जित करता है और शृंगार के नये-नये उपादानों से उसे अलंकृत करता है। दोनों आनन्दपूर्वक जीवन यापन कर रहे होते हैं कि उनके अपने मित्र गोपाल के यहाँ नरेन्द्र की भेंट एक नर्तकी से होती है। वह ऐसी शिकारी है जो रूप, गुण, संगीत इत्यादि से किसी का भी हृदय हर सकती है। फिर क्या था उस नर्तकी के ऊपर स्वयं को समर्पित कर देता है। उसके हृदय से किरण के रूप का जादू समाप्त हो चुका था। अब नरेन्द्र उस नर्तकी का होकर रह जाता है। अब वह उस नर्तकी के रूपपाश में बंधा देर रात तक उसके चरणों में लोटता रहता है और किरण से तरह-तरह के बहाने बनाया करता है। चोरी छुपे किरण के सारे आभूषण उस नर्तकी के भेंट चढ़ जाते हैं और एक ऐसा भी दिन आता है कि नर्तकी के प्रेम की समिधा में उसका सर्वस्व होम हो जाता है। जब किरण के सामने सब रहस्य खुलता है तो वह न केवल हतप्रभ हो जाती है वरन उसके प्राण-पखेरू भी उड़ जाते हैं। इस घटना के बाद नरेन्द्र की चेतना जागती है किन्तु तब तक अनर्थ हो चुका होता है। इसी चरम बिन्दु पर कहानी समाप्त हो जाती है।